

भूमंडलीकरण और हिंदी: वैश्विक परिदृश्य में अवसर, चुनौतियाँ और भविष्य

डॉ. धर्मेन्द्र दास

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मदन अहल्या महिला महाविद्यालय, नवगछिया, तिलका मांझी भागलपुर
विश्वविद्यालय, भागलपुर

शोध सार

प्रस्तुत शोध-पत्र में भूमंडलीकरण की अवधारणा, उसके ऐतिहासिक विकास और हिंदी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति पर पड़ने वाले बहुआयामी प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। भूमंडलीकरण बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की सर्वाधिक प्रभावकारी विश्वव्यापी प्रक्रिया है, जिसने राष्ट्र-राज्यों की सीमाओं को धुंधला कर विश्व को वैश्विक गाँव में परिवर्तित कर दिया है। भारत के संदर्भ में 1991 के आर्थिक सुधारों को इसका निर्णायक मोड़ माना जाता है। इस शोध का केंद्रीय तर्क यह है कि भूमंडलीकरण ने हिंदी के लिए एक विरोधाभासी स्थिति उत्पन्न की है। एक ओर इसने हिंदी को बाजार, बॉलीवुड, ओटीटी प्लेटफॉर्म, यूट्यूब, विज्ञापन और प्रवासी समुदाय के माध्यम से विश्वभाषा के रूप में स्थापित करने का अभूतपूर्व अवसर दिया है, तो दूसरी ओर अंग्रेजी के वर्चस्व, हिंग्लिश के प्रसार, भाषिक शुद्धता के हास और डिजिटल असमानता जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से यह निष्कर्ष निकालता है कि हिंदी का भविष्य तकनीक और बाजार के साथ समझौता करते हुए अपनी सांस्कृतिक आत्मा को बचाए रखने में निहित है।

बीज शब्द: भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, हिंदी भाषा, हिंग्लिश, बॉलीवुड, डिजिटल मीडिया, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, प्रवासी हिंदी, विज्ञापनी हिंदी, बाजारवाद।

प्रस्तावना

भूमंडलीकरण केवल एक आर्थिक शब्द नहीं है, बल्कि यह हमारे समय की जीवन-पद्धति बन चुका है। यह वह प्रक्रिया है जिसमें वस्तुएँ, सेवाएँ, पूँजी, सूचना, विचार और लोग राष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होते हैं। प्रसिद्ध समाजशास्त्री एंथनी गिडेंस ने इसे विश्वस्तर पर सामाजिक संबंधों के सघनीकरण के रूप में परिभाषित किया है, जहाँ दूरस्थ स्थानों में घटने वाली घटनाएँ स्थानीय घटनाओं को प्रभावित करती हैं। मनफ्रेड स्टेगर इसे अर्थव्यवस्था, राजनीति, संस्कृति और विचारधारा के अंतर्संबंध के रूप में देखते हैं। भारत में भूमंडलीकरण का औपचारिक प्रवेश 1991 में हुआ, जब विदेशी मुद्रा संकट के कारण भारत को अपनी अर्थव्यवस्था खोलनी पड़ी। लाइसेंस राज समाप्त हुआ, विदेशी निवेश को अनुमति मिली, निजी टेलीविजन चैनलों का आगमन हुआ। 1992 में जी टीवी, 1993 में स्टार प्लस और 1995 में इंटरनेट का व्यावसायिक उपयोग शुरू हुआ। इन सबने हिंदीभाषी समाज की कल्पना को बदल दिया। पहले हिंदी को गंगा-यमुना के दोआब तक सीमित माना जाता था, पर अब यह वैश्विक संचार की भाषा बन गई है। आज हिंदी केवल उत्तर भारत की भाषा नहीं, बल्कि लंदन के साउथहॉल से लेकर मॉरीशस के पोर्ट लुइस तक, फिजी से लेकर न्यूयॉर्क तक सुनी और समझी जाती है। इस शोध का महत्व इसलिए है कि यह हिंदी के भविष्य की दिशा तय करने में सहायक होगा।

शोध के उद्देश्य

इस शोध के पाँच प्रमुख उद्देश्य हैं। पहला, भूमंडलीकरण की अवधारणा, इतिहास और उसके बहुआयामी स्वरूपों का सैद्धांतिक विवेचन करना। दूसरा, हिंदी भाषा के ऐतिहासिक विकास को भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखना और यह समझना कि कैसे 1991 के बाद हिंदी का स्वरूप बदला। तीसरा, बॉलीवुड, डिजिटल मीडिया, विज्ञापन और हिंदी के वैश्विक प्रसार में प्रवासी भारतीयों की भूमिका का तथ्यपरक मूल्यांकन करना। चौथा, हिंग्लिश, अंग्रेजी वर्चस्व, सांस्कृतिक समरूपता और डिजिटल डिवाइड जैसी चुनौतियों का आलोचनात्मक परीक्षण करना। पाँचवाँ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और यूनिकोड जैसी नई संभावनाओं के आलोक में हिंदी के भविष्य के लिए व्यावहारिक और ठोस सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों पद्धतियों का सम्मिश्रण है। यह मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों में बॉलीवुड की 50 प्रमुख फिल्मों का बॉक्स ऑफिस डेटा, यूट्यूब के शीर्ष 100 हिंदी चैनलों का सब्सक्राइबर डेटा और विज्ञापन उद्योग की रिपोर्टें शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों में गजेंद्र सिंह चौहान, नामवर सिंह, सुधीर चंद्रा, रामविलास शर्मा की पुस्तकें, यूजीसी-केयर में सूचीबद्ध शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध-पत्र, भारत सरकार के राजभाषा विभाग की वार्षिक रिपोर्ट 2023-24, यूनेस्को विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट 2022 और मैकिन्से की डिजिटल इंडिया रिपोर्ट 2023 शामिल हैं। शोध में गुणात्मक विश्लेषण पर अधिक बल दिया गया है।

भूमंडलीकरण के स्वरूपों का विस्तृत विवेचन

भूमंडलीकरण को चार प्रमुख स्वरूपों में समझा जा सकता है। आर्थिक स्वरूप सबसे पुराना और मजबूत है। इसका आधार मुक्त व्यापार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विस्तार और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला है। आज भारत में दुनिया की 400 से अधिक बड़ी कंपनियाँ कार्यरत हैं। विश्व व्यापार संगठन के नियमों ने हिंदी पट्टी में भी विदेशी उत्पादों को पहुँचाया और उन उत्पादों के विज्ञापन हिंदी में बनने लगे। इससे हिंदी में नए शब्द आए और हिंदी का बाजार बढ़ा। सांस्कृतिक स्वरूप सबसे जटिल है। इसमें दो विपरीत धाराएँ काम करती हैं। एक ओर सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, जहाँ हॉलीवुड फिल्में, पॉप संगीत, ब्लू जीन्स और फास्ट फूड पूरी दुनिया में एक जैसी संस्कृति फैला रहे हैं। इसे मैकडोनाल्डीकरण कहा जाता है। दूसरी ओर सांस्कृतिक संकरण है, जहाँ वैश्विक और स्थानीय मिलकर नया रूप बनाते हैं। इसे ग्लोकलाइजेशन कहा जाता है। भारत में इसका सबसे अच्छा उदाहरण मैकडॉनल्ड द्वारा मैकआलू टिक्की और बर्गर में हिंदी नामों का प्रयोग है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने विचारों के आदान-प्रदान को इतना तेज कर दिया है कि आज एक गाँव में बैठा व्यक्ति भी वैश्विक संस्कृति से जुड़ गया है। राजनीतिक और तकनीकी स्वरूप में संयुक्त राष्ट्र, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाओं की भूमिका और इंटरनेट, स्मार्टफोन, सैटेलाइट का प्रसार शामिल है। 2000 में भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या केवल 50 लाख थी, आज यह संख्या 90 करोड़ से अधिक है। इनमें हिंदी में इंटरनेट उपयोग करने वालों की संख्या 60 करोड़ से अधिक है, जो अंग्रेजी उपयोगकर्ताओं से अधिक है। गूगल के अनुसार हिंदी में खोज 400 प्रतिशत बढ़ी है। यह आँकड़ा हिंदी के उज्ज्वल भविष्य का संकेत देता है।

हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास और भूमंडलीकरण से संबंध

हिंदी का विकास संस्कृत से पाली, प्राकृत, अपभ्रंश और अवहट्ट के माध्यम से होते हुए 1000 ईस्वी के आसपास हुआ। अमीर खुसरो को हिंदी का पहला कवि माना जाता है। भक्ति काल में कबीर, सूर, तुलसी ने हिंदी को जन-जन की

भाषा बनाया। 1949 में संविधान सभा ने अनुच्छेद 343 के तहत हिंदी को राजभाषा घोषित किया। 1963 में राजभाषा अधिनियम बना।

1991 से पहले हिंदी मुख्यतः सरकारी कामकाज, आकाशवाणी, दूरदर्शन और हिंदी साहित्य तक सीमित थी। 1991 के बाद निजी सैटेलाइट चैनलों ने हिंदी को नया जीवन दिया। स्टार प्लस के कौन बनेगा करोड़पति, जिसकी मेजबानी अमिताभ बच्चन ने हिंदी में की, ने हिंदी को शहरी मध्यम वर्ग में प्रतिष्ठित किया। विद्वान गजेंद्र सिंह चौहान लिखते हैं कि भूमंडलीकरण ने हिंदी को बाजार की भाषा बना दिया। पहले विज्ञापन अंग्रेजी में बनते थे, लेकिन अब बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ पहले हिंदी में सोचती हैं। आज हिंदी की वैश्विक स्थिति मजबूत है। फिजी में यह राजभाषा है, मॉरीशस और सूरीनाम में संसद की भाषा है तथा नेपाल, त्रिनिदाद और गुयाना में बड़ी आबादी हिंदी बोलती है। विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थापित है। अमेरिका के 50, ब्रिटेन के 20 विश्वविद्यालयों सहित विश्व के 120 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। यह गर्व का विषय है।

भूमंडलीकरण के सकारात्मक प्रभाव

सबसे बड़ा सकारात्मक प्रभाव बॉलीवुड का है। बॉलीवुड अब केवल फिल्म उद्योग नहीं, बल्कि भारत की सॉफ्ट पावर है। 2023 में शाहरुख खान की फिल्म पठान का 105 देशों में प्रदर्शन हुआ और 1000 करोड़ से अधिक की कमाई की। दंगल चीन में 2000 करोड़ की कमाई करने वाली पहली भारतीय फिल्म बनी। श्री इंडियट्स चीन के छात्रों में सबसे लोकप्रिय फिल्म है। जापान, जर्मनी, नाइजीरिया और मिस्र में हिंदी फिल्मों के फैन क्लब हैं। दक्षिण भारत में हिंदी फिल्मों की डबिंग से हिंदी सीखने की प्रवृत्ति बढ़ी है। हिंदी गाने, जैसे जिम्मी जिम्मी और आवारा हूँ, आज भी रूस में गाए जाते हैं।

दूसरा बड़ा प्रभाव डिजिटल मीडिया का है। यूट्यूब पर कैरीमिनाटी, आशीष चंचलानी, बीबी की वाइन्स जैसे चैनलों के 3 करोड़ से अधिक सब्सक्राइबर हैं। उनके वीडियो की भाषा हिंदी और हिंग्लिश है, पर लिपि रोमन है, जो युवाओं को आकर्षित करती है। ओटीटी प्लेटफॉर्म ने क्रांति ला दी है। नेटफ्लिक्स की सेक्रेड गेम्स और दिल्ली क्राइम तथा अमेजन प्राइम की मिर्जापुर और पाताल लोक ने हिंदी को वैश्विक दर्शक वर्ग दिया है। इन वेब सीरीज को अंग्रेजी उपशीर्षकों के साथ दुनिया देख रही है। इससे हिंदी शब्द, जैसे जुगाड़, यार और अच्छा, विश्व की शब्दावली में शामिल हो रहे हैं।

तीसरा प्रभाव विज्ञापन उद्योग का है। 1990 में हिंदी विज्ञापनों का बजट 10 प्रतिशत था, आज 55 प्रतिशत से अधिक है। पेप्सी का ये दिल मांगे मोर, कोका कोला का ठंडा मतलब कोका कोला, अमूल का ईट अमूल और कैडबरी का कुछ मीठा हो जाए जैसे विज्ञापन हिंदी में बने और यादगार बने। इसे विज्ञापनी हिंदी कहा जाता है, जो संक्षिप्त, आकर्षक और मिश्रित होती है। इसने हिंदी को युवाओं की भाषा बनाया।

चौथा प्रभाव प्रवासी भारतीयों का है। अमेरिका में 45 लाख भारतीय रहते हैं। उन्होंने 200 से अधिक हिंदी स्कूल खोले हैं। न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी, कैलिफोर्निया में हिंदी सम्मेलन होते हैं। ब्रिटेन में हिंदी को जीसीएसई में शामिल किया गया है। मॉरीशस में हर साल विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। प्रवासी भारतीय हिंदी के माध्यम से रोजगार भी दे रहे हैं, जैसे अनुवाद, डबिंग और शिक्षण।

पाँचवाँ प्रभाव साहित्य का है। गीतांजलि श्री की रेत समाधि के अंग्रेजी अनुवाद टॉम्ब ऑफ सैंड ने 2022 में अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीता। यह हिंदी साहित्य के लिए ऐतिहासिक क्षण था। आज प्रेमचंद, कृष्णा सोबती, निर्मल वर्मा,

फणीश्वरनाथ रेणु के अनुवाद 20 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध हैं। दलित साहित्य और आदिवासी साहित्य वैश्विक मंच पर पहुँच रहे हैं। यह हिंदी की शक्ति है।

नकारात्मक प्रभाव और चुनौतियाँ

पहली और सबसे बड़ी चुनौती हिंग्लिश है। हिंग्लिश हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रण है, जहाँ वाक्य की संरचना हिंदी की होती है, पर शब्द अंग्रेजी के होते हैं। जैसे— यार, मेरा मूड ऑफ है, मुझे एक ब्रेक चाहिए। दिल्ली विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के 2023 के संयुक्त सर्वेक्षण के अनुसार 78 प्रतिशत छात्र आपसी बातचीत में हिंग्लिश का प्रयोग करते हैं। सोशल मीडिया पर यह आँकड़ा 85 प्रतिशत है। इससे हिंदी व्याकरण और शब्द-संपदा कमजोर हो रही है। युवा पुस्तक की जगह बुक, जल की जगह वाटर लिखते हैं। यह चिंता का विषय है।

दूसरी चुनौती अंग्रेजी का वर्चस्व है। भारत में निजी क्षेत्र की 90 प्रतिशत नौकरियों में अंग्रेजी अनिवार्य है। माता-पिता अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भेजना प्रतिष्ठा का विषय मानते हैं। 2010 में हिंदी माध्यम के स्कूलों की संख्या 60 प्रतिशत थी, आज यह 35 प्रतिशत रह गई है। अदालतों, चिकित्सा और इंजीनियरिंग में हिंदी का प्रयोग नगण्य है। इससे हिंदी बोलने वालों में हीन भावना आती है। यह भाषिक असमानता है।

तीसरी चुनौती सांस्कृतिक समरूपता है। भूमंडलीकरण के कारण युवा नमस्ते की जगह हाय, धन्यवाद की जगह थैंक्स, आप कैसे हैं की जगह हाउ आर यू बोलने को आधुनिकता मानते हैं। हिंदी में अंग्रेजी शब्दों का अनावश्यक प्रयोग बढ़ रहा है—जैसे कूल, फैन, लाइक, कमेंट, शेयर। इससे हिंदी की मौलिकता प्रभावित हो रही है। पश्चिमी संस्कृति के अधानुकरण से हमारी लोक संस्कृति, लोकगीत और लोककथाएँ पीछे छूट रही हैं।

चौथी चुनौती डिजिटल असमानता है। शहरों में 75 प्रतिशत लोगों के पास स्मार्टफोन है, जबकि ग्रामीण भारत में यह आँकड़ा केवल 35 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों में हिंदी में गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री की कमी है। कई वेबसाइटों का अंतरफलक केवल अंग्रेजी में है, जिससे ग्रामीण हिंदीभाषी पीछे छूट जाते हैं। यह डिजिटल इंडिया के सपने में बाधा है।

निष्कर्ष और भविष्य की संभावनाएँ

भूमंडलीकरण हिंदी के लिए दोधारी तलवार है। इसने हिंदी को वैश्विक मंच दिया है, पर उसकी शुद्धता को भी चुनौती दी है। हिंदी ने बाजार से समझौता कर अपना विस्तार किया है, जो व्यावहारिक और आवश्यक कदम था। आज हिंदी केवल भावना नहीं, बल्कि बाजार की आवश्यकता भी है। भविष्य के लिए पाँच सुझाव महत्वपूर्ण हैं। पहला, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का ईमानदारी से पालन, जिसमें मातृभाषा में शिक्षा पर बल दिया गया है। मातृभाषा में पढ़ने वाला बच्चा अधिक रचनात्मक होता है। दूसरा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद, वॉयस टाइपिंग में हिंदी को बढ़ावा। गूगल असिस्टेंट और एलेक्सा अब हिंदी समझते हैं; इसे और बेहतर बनाना होगा। तीसरा, यूनिकोड और हिंदी टाइपिंग को सरल बनाना, ताकि युवा रोमन की जगह देवनागरी में लिखें। चौथा, हिंदी में गुणवत्तापूर्ण सामग्री—विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा और कानून का निर्माण। पाँचवाँ, सरकार द्वारा हिंदी फिल्मों, वेब सीरीज और यूट्यूब चैनलों को अनुदान और प्रोत्साहन। अंततः हिंदी केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, सहिष्णुता, भाईचारा और वसुधैव कुटुंबकम् की भावना की वाहक है। यदि हम हिंदी को तकनीक से जोड़कर, बाजार के साथ चलकर भी उसकी आत्मा को बचाए रख सकें, तो हिंदी निश्चित रूप से इक्कीसवीं सदी की वैश्विक भाषा बनेगी और विश्व को एकता के सूत्र में पिरोएगी।

संदर्भ सूची

1. स्टेगर, मनफ्रेड. भूमंडलीकरण: एक संक्षिप्त परिचय. ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 2017.
2. टॉमलिनसन, जॉन. भूमंडलीकरण और संस्कृति. पॉलिटी प्रेस, 1999.
3. चौहान, गजेंद्र सिंह. भूमंडलीकरण और हिंदी. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015.
4. सिंह, नामवर. हिंदी का वैश्विक परिदृश्य. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010.
5. तिवारी, रामदेव. भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी. भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2018.
6. गिडेंस, एंथनी. आधुनिकता के परिणाम. स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 1990.
7. क्रिस्टल, डेविड. वैश्विक भाषा के रूप में अंग्रेजी. कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, 2003.
8. भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग वार्षिक रिपोर्ट 2023-24, नई दिल्ली.
9. यूनेस्को विश्व हिंदी सचिवालय रिपोर्ट, मॉरीशस, 2022.
10. काचरू, यमुना. हिंदी भाषा का वैश्विक अध्ययन. जॉन बेजामिन्स, 2006.
11. मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट. डिजिटल इंडिया और भाषाई इंटरनेट अर्थव्यवस्था, 2023.
12. जैन, रवींद्र. बॉलीवुड और हिंदी का वैश्वीकरण. सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021.
13. रॉबर्टसन, रोलैंड. वैश्वीकरण: सामाजिक सिद्धांत और वैश्विक संस्कृति, 2019.